संस्कार की अनिवार्यता

.......मेरे प्यारे महानन्द जी कहा करते हैं कि मानव का संस्कार क्या है? संस्कारों से ऊपर, 'चित्त के व्रवहा, चित्तम् रुद्रा, चित्तम् मानव चत्ते प्रमाणः चित्तयम्'। मानो यह जो चित्त है इसमें मानव के जन्म जन्मान्तरों के संस्कार विराजमान होते रहते हैं। यह संस्कारों का मूल क्षेत्र कहलाया गया है। हमें तो बेटा! अनुभव में भी आता रहता है कि वास्तव में मानव के लाखों वर्ष के संस्कार भी कभी न कभी आने प्रारम्भ हो जाते हैं।

इसी प्रकार मुनिवरो! जब माता के गर्भ में प्यारा पुत्र होता है तो उस समय माता–पिता दोनों ही संस्कार की पवित्र वेदी पर जाते हैं। संस्कार उसे कहते हैं जहाँ से वस्तुओं का मिलान होता है। दो वस्तुओं का मिलान माता के गर्भस्थल में ही ओत–प्रोत हो जाता है। जब वही बालक बन करके माता के गर्भ से पृथक होता है उन परमाणुओं को एकत्रित करने वाला मेरा प्यारा प्रभु है। जैसे चित्त के संस्कार होते हैं और माता–पिता की भावना होती है, माता–पिता का जितना शुद्ध कर्म होता है उन्हीं भावनाओं को ले करके प्रभु बालक की सुन्दर रचना कर देता है। माता के गर्भस्थल में जो रचियता रचता है वह सुन्दर रूपों से रचा करता है। मेरे प्यारे ऋषिवर! जो चित्त का संस्कार है और माता की जो सुन्दर भावना है उन भावनाओं को ले करके प्रभु इस मानव का निर्माण किया करता है और वह जो निर्माण है वह अद्वितीय है, महान है और पवित्र है परन्तु उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। उनमें अन्नता विराजमान है। मानव के शरीर में भी अनन्ता विराजमान है जैसे ब्रह्माण्ड में तुम्हें अनन्ता प्राप्त होती है। मुनिवरो देखो! **प्रत्येक मानव संस्कार से ही प्राप्त होता है। जब मानव का कोई संस्कार नहीं होगा तो मानव का मिलन होने का कोई प्रश्न उत्पन्न नहीं होता है। आज कोई मानव यह कहता है कि यह जो शरीर है यह छिन्न–भिन्न होने के पश्चात् इसका कोई जन्म नहीं होता। मानो देखो शरीर आत्मा का जन्म नहीं परन्तु केवल रूपान्तर होता रहता है भोगों को भोगने के लिये क्योंकि भोगों के अधीन ही मानव की स्वकीय क्रिया विराजमान रहती है। इसलिये आवागमन किसका है? आत्मा न कहीं आता है न कहीं जाता है परन्तु उसका आवागमन आँगन में माता के गर्भस्थल आना है। आने के नाते उसमें पूर्ववत् 'संस्कारः विशेषाः' देखो साधारणतया किसी ने क्लिष्ट नाना प्रकार के संस्कारों की कटिबद्धता ले करके उसी प्रकार के माता पिता उसका संस्कार अग्रित किया करते हैं।**

तो मेरे प्यारे ऋषिवर! यदि **संसार में किसी चित्त में संस्कार नहीं होगा तो यहाँ जन्म लेने का कोई कारण बनता ही नहीं क्योंकि कारण तभी बना करता है जब कोई संस्कार होता है कोई न कोई उसकी प्रतिभा संसार में शेष रह जाती है और उन्हीं संस्कारों से मानव का जन्म होता है क्योंकि परमपिता परमात्मा चित्त से रहित है इसलिये परमात्मा का जन्म नहीं होता जहाँ चित्त होता है वही जन्म होता है और जहाँ चित्त भी नष्ट हो जाता है वहाँ मुक्ति का वाक्य माना जाता है।** आज कोई मानव यह प्रश्न करने लगता है कि जब मुक्ति में चित्त नहीं रहता, मानो कोई भी संस्कार नहीं रहता तो मुक्ति से संसार में आने का कोई कारण बनता है अथवा नहीं? इसमें कुछ ऐसा कहा गया है कि यह जो आत्मा है इसमें अल्पज्ञता होने के नाते, परमात्मा में सामान्य होने के कारण इसमें कुछ न कुछ अंकुर रूपों से कोई न

कोई संस्कार ऐसा सूक्ष्म रहता है जिसकी कोई अवधि होती है। आज इस सम्बन्ध में अधिक विवेचना देने नहीं आया हूं। केवल यह उच्चारण करने आ पहुंचा हं कि ***संस्कार अवश्य होने चाहिये। संस्कार कहते किसे हैं? संस्कारों की प्रतिभा क्या है? संस्कार कहते हैं जो मानव चित्त में अंकुर विराजमान हो जाते हैं बीजों का संस्कार कहा जाता है।*** माता के गर्भस्थल से जब बालक का जन्म होता है तो उस बालक को पिता अपने भुजाओं से अमृतत्व का पान कराता है, शहद इत्यादियों का पान कराता रहता है और वह कहता है कि हे बालक! तू मेरे गृह में आया है क्यों आया है? गृह में आने का क्या तात्पर्य है? हमारे ऋषि मुनियों ने कहीं कहीं तो इसे आवागमन का ही क्षेत्र कहा है, कहीं कहीं इसे देने लेने का क्षेत्र कहा है तो मैं इस सम्बन्ध में अधिक चर्चा नहीं प्रकट करूंगा केवल यह कि बालक को जब यह कहा जाता है तो वह बालक कोई वाक्य उच्चारण नहीं करता। उसके पश्चात् बालक का नामकरण संस्कार कर देते हैं, उपनयन संस्कार कर देते है कहीं जन्म संस्कार कर देते हैं, नाना प्रकार के संस्कारों का जन्म होता रहता है। वह संस्कार प्रायः बालक स्वीकार नहीं करता है परन्तु बालक का जो अन्तःकरण है जिसको हम चित्त कहते हैं उसमें पिता कहा हुआ शब्द आदित्य बन करके उसके अन्तःकरण में अंकित हो जाता है। अंकित क्यों हो जाता है? क्योंकि बालक का हृदय निर्मल होता है, स्वच्छ होता है, सात्विक होता है। वह संस्कार इस प्रकार के अंकित होते हैं कि वह बेटा! किसी भी काल में नष्ट नहीं होते। उसके पश्चात् जब बालक का नामकरण संस्कार होता है तो नामकरण के साथ–साथ नामोच्चारण किया जाता है हे बालक जब तू कोई शब्द उच्चारण नहीं कर रहा है तो मैं तेरे नाम का उच्चारण कर रहा हूं क्योंकि तेरी आत्मा का कोई नाम नहीं है, तत्वों का कोई नाम नहीं है जिनसे सुगठित हुआ पिण्ड प्रतीत हो रहा है जैसे देखो गृह का नाम है, गृह पृथ्वी के परमाणुओं से बना है, अग्नि में उसे तपाया है परन्तु मेरा गृह यह संस्कार उसके मस्तिष्क में लग जाता है क्योंकि उसका परिश्रम और उसके चित्त में जो संस्कार विराजमान हो गये हैं। इसी प्रकार हमारे यहाँ कुछ ऐसी परम्परा मानी जाती है कि तब माता और पिता नामोच्चारण करते हैं तो उस समय माता–पिता दोनों के हृदय की महानता की कोई सीमा नहीं होती। परन्तु मैं यह कहा करता हूं कि ऐसे माता–पिता जो अपने बालक को संस्कारों में परिणत कर देते हैं **नामकरण संस्कार है, यज्ञोपवती संस्कार है वेद के पठन–पाठन करने का संस्कार** है और भी नाना संस्कार होते हैं। हमारे यहाँ सोलह संस्कार माने गये हैं। उन सोलह संस्कार में क्या–क्या प्रतिक्रिया है यह सूक्ष्म रूप से मैं अभी कुछ परिणत किये देता हूं। **......**